O

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकण्ड्री

1. विषय कोड 0 0 1. परीक्षा का विषय हिन्दी (विशि

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12-03-0

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्र० 351050

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C,या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2001	A

तीर

माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल

का

क्रमांक K 4644871

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :–

क :– संख्या शब्दों में ☒ अंकों में ☒

ख :– परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 04 में है।

ग :– उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

4. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	3	5	1	8	8	1	7

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को शब्दों में लिखा जाए :–

BOARD OF SECO

B हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

S नाम पद

पता / संस्था

E परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

M

P हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्ति यथा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन कि पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक स

हस्ताक्षर (परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 5620254

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक........................

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक........................

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोडें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौंपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ का अंक कुल अंक

प्रश्नक्रमांक-1

उत्तर:

(i) कृष्ण को मथुरा ले जाने के लिए अक्रूर आया था।

(ii) रामचन्द्रिका के रचयिता केशवदास है।

(iii) श्रीकृष्ण के प्रति मीरा का दाम्पत्य भाव है।

(iv) प्रगतिशील लेखकों के संघ की स्थापना सन् 1936 में हुई।

(v) 'सूर्य का स्वागत' दुष्यन्त कुमार की रचना है।

प्रश्नक्रमांक-2

उत्तर:

(i) 'फिर वसन्त आया' उषा प्रियंवदा का कहानी संग्रह है।

(ii) भय जब स्वभावगत हो जाता है तो कायरता कहलाता है।

(iii) काव्य में सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग कबीर ने किया।

(iv) छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।

(v) शोषण का विरोध प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख विशेषता है।

B S E M P

पृष्ठ के अंक

योग पूर्व

BSEMP

प्रश्न क्रमांक

(i) कबीर प्रेमाश्रयी शाखा के कवि हैं। [असत्य]

(ii) भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है। [सत्य]

(iii) श्रृंगार रस का स्थायी भाव हास होता है। [असत्य]

(iv) एकांकी दृश्य काव्य का रूप होता है। [सत्य]

) शरद जोशी प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं। [सत्य]

प्रश्न क्रमांक-4

उत्तर:

(i) काव्य में सर्वाधिक छंदों का प्रयोग होता है - (ख) केशव ने

(ii) काव्य में भाव-विह्वलता स्पष्ट झलकती है। - (क) मीरा ने

(iii) राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाले कवि हैं - (ङ) गोपाल सिंह नेपाली

(iv) रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि है - (क) घनानंद

v) 'उद्धव प्रसंग' नामक कविता के रचयिता है - (घ) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

प्रश्न क्रमांक-5

उत्तर:

(i) 'सूरदास'

(ii) 'सरल वाक्य'

(iii) 'वैद्य'

iv) तात्या टोपे को

(v) उनकी लेखनी है

BSEMP

6

योग पूर्व पृष्ठ

कुल अंक

उत्तर:- कबीरदास जी शब्द की महिमा का वर्णन करते हुए कहते है कि मनुष्य को अपने मुख से शब्द आवश्यकतानुसार सोच-विचार कर निकालने चाहिए क्योंकि शब्द के तो हाथ व पैर नहीं होते है, परंतु वह अपने अनुरुप कार्य सिद्ध करा लेता है। कबीर जी अपने द्वारा पुनः शब्द की महिमा का वर्णन करते हुए कहते है कि जो शब्द मधुर होते है, वे व्यक्ति के लिए औषधि का कार्य करते है तथा जो शब्द मधुर नहीं अर्थात कठोर होते है, वह हृदय को आघात पहुंचाता है अतः व्यक्ति को कठोर, कर्णकटु व कर्कश शब्द नहीं बोलने चाहिए।

प्रश्न क्रमांक-4

उत्तर:- विभावरी अर्थात् ज्योत्स्नामयी रात्रि से है। एक स्त्री दूसरी स्त्री से कहती है कि हे सखी! यह रात्रि समाप्त हो गयी है तथा 'उषा नागरी' अर्थात प्रातः-काल रुपी चतुर स्त्री अम्बर रुपी पनघट मे तारे रुपी घड़ो को डुबा रही है। तथा पक्षियों के समूह 'कल-कल' की ध्वनि से कलरव कर रहे है। नये कोमल पत्तो रुपी सभी वृक्ष लहराने लगे है। लताएँ भी पराग युक्त पुष्प से नवीन पराग को भी ग्रहण कर रही है।
अतः 'विभावरी' के बीतने पर 'उषा नागरी' अम्बर रुपी पनघट में तारे रुपी घट को डुबो रही है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक-8

उत्तर:- छायावाद की चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:-

(i) व्यक्तिवाद की प्रधानता:- छायावादी काव्य मानवीय मूल्यों पर विशेषतया ध्यान दिया गया है।

(ii) शृंगार भावना:- इस युग में मानवीय जीवन के शृंगारिक वर्णन पर ध्यान देकर काव्य में रचना किया

(iii) प्रकृति का मानवीकरण:- इस काव्य में प्रकृति-चित्रण का अत्यन्त मार्मिक ढंग से मानवीकरण किया है।

(iv) नारी के प्रति नवीन भावना:- छायावादी काव्य में नारी शोषण के विरुद्ध मुक्ति का स्वर मुखरित किया है।

प्रश्न क्रमांक-9

उत्तर:- हिन्दी में 'नाटक सम्राट' जयशंकर प्रसाद हैं। उनके दो नाटकों के नाम हैं:-

(i) स्कन्दगुप्त

(ii) ध्रुवस्वामिनी

B S E M P

पृष्ठ के

B
S
E
M
P

प्रश्न क्रमांक 10

उत्तर:- गाँव के जीवन में गायब हो रही तीन पारम्परिक चीजों के नाम:-

(i) गाँव के खेती में हलों के टिपोंकी टिटकारें नहीं रह गई हैं उसके स्थान पर ट्रैक्टर धरती की छाती पर चलती हुई दिखाई देती है।

(ii) गाँव में वे घण्टियाँ व घड़ियाल नहीं रह गए हैं, जो सुबह-सवेरे मन्दिर में गूँजती थी।

(iii) गाँवों में प्रायः पशुओं का भी परिहार होता जा रहा है।

प्रश्न क्रमांक 11

उत्तर:- उत्तराखण्ड के चार धाम यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ व बद्रीनाथ हैं, ये निम्नलिखित चार पवित्र नदियों के किनारे स्थित हैं:-

(1.) यमुनोत्री:- यह यमुना नदी के किनारे स्थित है।

(2.) गंगोत्री:- यह गंगा नदी के किनारे स्थित है।

(3.) केदारनाथ:- यह मन्दाकिनी नदी के किनारे स्थित है।

(4) बद्रीनाथ:- यह अलकनन्दा नदी के किनारे स्थित है।

9

प्रश्न क्रमांक-12

उत्तर:- छप्पय छंद:- यह छन्द रोला व उल्लाला छन्दों से मिलकर बना है। इसके प्रथम चार चरणों में 24-24 मात्राएँ होती हैं तथा 11-13 मात्राओं पर यति होती है, अन्तिम दो चरणों में 28-28 मात्राएँ होती हैं तथा 15-13 मात्राओं पर यति होती है।

उदाहरण:-

नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है,
सूर्य-चन्द्र युग-मुकुट, मेखला रत्नाकर है,
नदियाँ प्रेम-प्रवाह फूल तारे मण्डप हैं,
बन्दीजन खग वृन्द शेष फन सिंहासन है,
करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी इस देश की,
हे मातृभूमि! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।

प्रश्न क्रमांक-13

उत्तर:-

(अ) तूती बोलना - मोहन बदले की भावना आत्मसात करके अपने शत्रु के घर पर तूती बोल दिया।

(ब) गुदड़ी का लाल - अपने पिताजी की अस्वस्थता देखकर राम सप्ताहभर से गुदड़ी का लाल हो गया था।

प्रदेश में बोली जाने वाली दो बोलियों के नाम निम्न हैं:-

(1.) बुन्देली,
(2) बघेली,

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(1

उत्तर:- डॉ॰ रघुवीर सिंह का साहित्यिक परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर:-

(क) दो रचनाएँ:-
(i) शेष स्मृतियाँ,
(ii) बिखरे फूल,

(ख) भाषा:- डॉ॰ रघुवीर सिंह जी की भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुबोध है। यद्यपि भाषा में संस्कृतनिष्ठता दृष्टिगत होती है, तथापि यथावसर विषयानुकूल उर्दू शब्दों के प्रयोग में परहेज नहीं किया गया है। जिससे विषय प्रतिपादन प्रवाहमयी एवं प्रभावो--त्पादक बन जाती है। भाषा ललित है जो सहज ही पाठकों को भाव प्रवण तथा संवेदनशील सहयात्री बना देती है। भाषा में कहावतों व मुहावरों का प्रयोग किया है तथा अभिव्यक्ति में काव्य की-सी भावुकता अनुप्राणित है।

शैली:- (i) भावात्मक शैली,
(ii) चित्रात्मक शैली,
(iii) आलंकारिक शैली,
(iv) विचारात्मक शैली,
(v) वर्णनात्मक शैली।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(ग) साहित्य में स्थान:- डॉ॰ रघुवीर सिंह जी हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक निबन्धकार के रूप में प्रसिद्ध है। उनके निबन्धों में उनका दार्शनिक चिन्तक, शोधपरक अनुसंधित्सु तथा साहित्यिक आलोचक सर्वत्र विशिष्ट है। इन्हीं शोध, चिन्तन और साहित्यिक सांस्कृतिक अभिरुचि का मूर्त रूप है नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ जहाँ संस्कृति, सभ्यता और साहित्य में प्रायः शोध किया जा रहा है।

प्रश्न क्रमांक-15

उत्तर:- जयशंकर प्रसाद का काव्यगत परिचय निम्न बिंदुओं के आधार पर:-

(क) दो रचनाएँ:-

(i) आँसू

(ii) कामायनी

(ख) भाव-पक्ष:- प्रसाद जी छायावादी कविता के आधारस्तंभ कवि माने जाते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम तथा शोषितों से सहानुभूति समाविष्ट किया है। प्रसाद जी ने प्रकृति का मानवीकरण का सौंदर्य तथा जीवन-दर्शन व अभिव्यंजना शैली है। प्रसाद जी ने अपनी कविता मानव जीवन की मार्मिकता का तथा यथार्थता का करारा प्रहार किया है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

कला-पक्षः- जयशंकर प्रसाद जी की भाषा सरल व सरस है, भाषा में प्रवाह है। शब्दों का चयन सटीक है। भाषा में मुहावरों का यथास्थान सार्थक प्रयोग किया है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सवैया, छप्पय आदि अलंकारों तथा छन्दों का प्रयोग किया है। भाषा अलंकारों की सहज आवृत्ति है तथा छंदों में संगीतात्मकता है।

(ग) साहित्य का स्थानः- प्रसाद जी हिन्दी साहित्य में कलाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं उनकी रचनाओं में कवि हृदय की कलात्मक अभिव्यक्ति और भावात्मक अनुभूति के कारण इनका हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान है।

प्रश्न क्रमांक-17

उत्तरः- ठान लोगे .... आनन देना।

संदर्भः- प्रस्तुत पद्यांश कवि श्रीकृष्ण 'सरल' के शीर्षक राष्ट्र के श्रृंगार से अवतरित है।

प्रसंगः- प्रस्तुत पद में कवि जी ने देश-हित हेतु अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले भारतीय युवाओं का आह्वान किया है।

(

व्याख्या:- प्रस्तुत पद्यांश में कवि देश-रक्षा हेतु भारतीय नवयुवकों का आह्वान करते हुए कहते हैं कि यदि अपने अन्दर तुम यह दृढ़ निश्चय कर लेते हो तो तुम इस वर्तमान युग को नया आकार दे सकते हो। यदि तुम देश-प्रेम की भावना से ग्रसित होकर गर्जना करोगे तो तुम शत्रुओं के आक्रमण को रोककर उनको धाराशाही कर सकते हो। कवि नवयुवकों से कहता है कि हे नवयुवकों! यदि देश के आन-मान की बात हो तो तुम अपने सुख को त्यागकर अपना सर्वस्व अर्पित कर देना। अर्थात् यदि शत्रुओं की आक्रमण रूपी काली घटा जब छाये जाने लगे तो तुम अपने प्राणों की आहुति दे देना। अन्ततः कवि कहते हैं कि हे नवयुवकों! देश की स्वाधीनता पर हुतात्माओं का प्रकोप उज्ज्वल मत होने देना।

विशेष:-

(i) उपर्युक्त कविता उत्साहवर्धक कविता है।
(ii) भाषा शुद्ध, परिमार्जित व उत्तेजनापूर्ण है।
(iii) रस- वीररस
(iv) अलंकार अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश
(v) गुण- ओजगुण
(vi) शब्दशक्ति- लक्षणा।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्रमांक-16

उत्तर:

मानव के लिए ------------------- सकुचा गये।

संदर्भ:- प्रस्तुत गद्यांश डॉ. रघुवीर सिंह द्वारा रचित यशोधरा शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग:- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने मानव जीवन के क्षणभंगुरता व असारता के बारे में वर्णन किया है।

व्याख्या:- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कहते हैं कि गौतम बुद्ध जी ने मानव जीवन के लिए समुद्र मंथन से प्राप्त हालाहल (विष) को अमृत के समान ग्रहण किया है। गौतम ने इस प्राप्त चिर वियोग के अमृत को अपनी पत्नी यशोधरा को ग्रहण करने के लिए कहता है। परन्तु यशोधरा उस कालकूट को पीने के बावजूद नीलकण्ठा नहीं नहीं हुई अर्थात उस पर किसी भी चीज का प्रभाव नहीं पड़ता है। इस दृश्य को देखकर कैलाश पर निवास करने वाले भगवान शंकर भी लज्जा के समावेश के मारे संकुचित हो जा रहे थे। अर्थात गौतम बुद्ध द्वारा यशोधरा को चिर वियोग को अमृत देने पर भी वह उसे स्वीकार नहीं करती है।

पृष्ठ 15 के अंक

विशेष:-

(i) इस पंक्ति में चिर-वियोग के सुख की प्रधानता है
(ii) यशोधरा सदा चिर-सुख को प्राप्त नहीं करती है
(iii) भाषा सरल व सहज है
(iv) यशोधरा के जीवन में पति-सुख के वियोग समाविष्ट है।

प्रश्नक्रमांक- 18

उत्तर:-

(क) शीर्षक- सर्वोत्कृष्ट कविता का लक्षण

(ख) भावार्थ:- वही कविता सर्वोत्तम होती है जिसके पढ़ने, सुनने से पाठक, श्रोता का मन कवियों की भावना में उद्वेलित हो जाता है। यदि कवि अपने हृदय की भावनाओं को वास्तविक रूप से पाठक व श्रोता के पास जितनी अधिक प्रतिभा से पहुँचाते हैं, उन कवियों की कविता का उतना ही अधिक आदर होता है। यदि कवि के हृदय की बात पाठकों व श्रोता में प्रवेश कर जायें तो वह कवि अपनी कविता में आदर पाते हैं।

(ग) जिस कवि में अपने हृदय के भाव को यथार्थ रूप में पाठक या श्रोता के हृदय में पहुँचाने की जितनी अधिक प्रतिभा होती है, ऐसे ही कवियों की कविता का सदैव आदर होता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(16)

प्रश्न क्रमांक 2

उत्तर-

सेवा में,

श्रीमान् प्राचार्य महोदय,
सरस्वती शिशु मन्दिर उ॰ मा॰ वि॰ जयंत,
जयंत, जिला- सीधी (म॰प्र॰)

विषय:- निर्धन छात्रकोष से छात्रवृत्ति हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय के कक्षा- द्वादश (ब) का छात्र हूं। मेरे पिताजी किसान हैं। जिससे मैं स्कूल के शुल्क राशि को चुकाने में असमर्थ हूँ। मुझे हर वर्ष निर्धन छात्रकोष से छात्रवृत्ति मिलती रही है और आशा करता हूँ कि मुझे इस वर्ष भी छात्रवृत्ति प्राप्त होगी।

अस्तु श्रीमान् जी अनुरोध है कि मुझे निर्धन छात्रकोष से छात्रवृत्ति प्रदान करने की कृपा करें। मैं इसे कार्य के लिए सदैव आपका आभारी रहूँगा।

दिनांक 12-3-09

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
राकेश शर्मा
कक्षा- द्वादश 'ब'
रोलनं - 29358817

B S E M P

पृष्ठ के अंक।

प्रश्न क्रमांक 20

(iii) भारतीय समाज में नारी का स्थान

[रूपरेखा- प्रस्तावना, आधुनिक काल की नारी, प्राचीन काल की नारी, मध्य काल की नारी, नारी शिक्षा, उपसंहार]

(i) प्रस्तावना:- भारतीय समाज में नारी का प्राचीन काल से उच्च स्थान रहा है। वह समाज में उच्च स्थान पर गरिमामयी स्थान अर्जित कर ली है। उसे प्राचीन काल में गृहस्थी रूपी रथ का एक पहिया माना जाता था जिसके बिना कुछ भी संभव नहीं था। यहाँ तक कि प्राचीन काल में महर्षियों-मुनियों द्वारा आयोजित यज्ञ में नारियों का अत्यन्त आवश्यक माना जाता था तभी उन्होंने लिखा है अयज्ञियो अपत्नीकः अर्थात् बिना पत्नी के यज्ञ को सम्पादित नहीं किया जा सकता है। नारियों आधुनिक युग पुरुषों से कहीं अधिक ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित हैं इसलिए लोगों ने उनकी विशेषता बनकर भारत की समृद्धि के लिए आह्वान किया है:-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग-पग तल में,
पियूष-स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(ii) प्राचीनकाल की नारी:- प्राचीनकाल में नारी को उच्च स्थान प्राप्त था। वह गृहस्थी में अपना हाथ बटाती थी। नारी आज के युग के नवनिर्माण की धरोहर है। गृहस्थी रूपी रथ उसी प्रकार होता था जिस प्रकार रथ में एक पहिया रूपी स्त्री के न रहने पर वह अस्तित्वहीन रह जाता है। प्राचीनकाल में नारियों का इतना अधिक महत्व था कि कोई शुभकार्य जैसे- यज्ञ में हवन होने से पूर्व नारी का उपस्थित होना अनिवार्य माना जाता था।

(iii) मध्यकाल की नारी:- मध्यकाल के समय नारियों के प्रति शोषण होता था। बड़े राजा-महाराजाओं की उपस्थिति के स्थान पर नारियों का होना वर्जित था। एक नारियों को वे कहते थे कि तुम्हारा कार्य केवल घर के रसोई तक ही सीमित है। उन्हें एक कोठरी में बन्द रहना पड़ता था। इसी सन्दर्भ में यह कविता दृष्टव्य है:-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में दूध और आँखों में है पानी।

(iv) आधुनिक काल की नारी- आधुनिक समय में नारियाँ प्रत्येक क्षेत्र में कार्यरत हैं। प्राचीन में झांसी की रानी व दुर्गावती जैसे वीरांगनाओं के समान वह निरंतर हर क्षेत्र में कार्यरत है। वह डॉक्टरी, इंजीनियरी, राजनीतिक सभी क्षेत्र में कार्यरत है। ये नारियाँ अपने कर्तव्य, अनूठे पराक्रम

और अदम्य साहस के द्वारा अपने देश की भी रक्षा कर रही हैं
जैसे :-

धन्य आधुनिक नारि नव निर्माण रही जगा,
कीर्ति पताका फहराती है अपनी चिर संस्कृति की,

(v) नारी-शिक्षा - ये नारियाँ निरंतर अपने कर्तव्य पथ पर अपने प्राण-पण से संघर्ष व सेकर के समय भाग लेते हैं ये नारी उच्च शिक्षा प्राप्त कर बड़े से बड़े पद पर प्रतिष्ठित हैं। नारी-शिक्षा के लिए प्रत्येक राज्य के लिए अच्छे अभियान चलाए जा रहे हैं नारी-शिक्षा सब जगह अनिवार्य कर दी गई है। इसके लिए विशेष प्रकार के आयोजन भी चलाए जा रहे हैं

(vi) उपसंहार - उपर्युक्त सम्पूर्ण बातों से स्पष्ट है कि नारी का भारतीय समाज पर उच्च स्थान है। हर क्षेत्र में नारी तो अनाभिषिक्त (बेताज) साम्राज्ञी हो गयी है। वह प्रत्येक क्षेत्र में अनूठे पराक्रम, अदम्य साहस से कार्यरत है जिससे उसके कार्य गगनचुम्बी की ऊँचाई तक पहुँच गई है। इन कार्यों से प्रेरित यह कथन कहा गया है :—

"शिक्षा के प्रकाश में नूतन राह बनाती जाती,
अपनी खुशबू से सारा संसार सुवासित करती जाती"

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 21 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

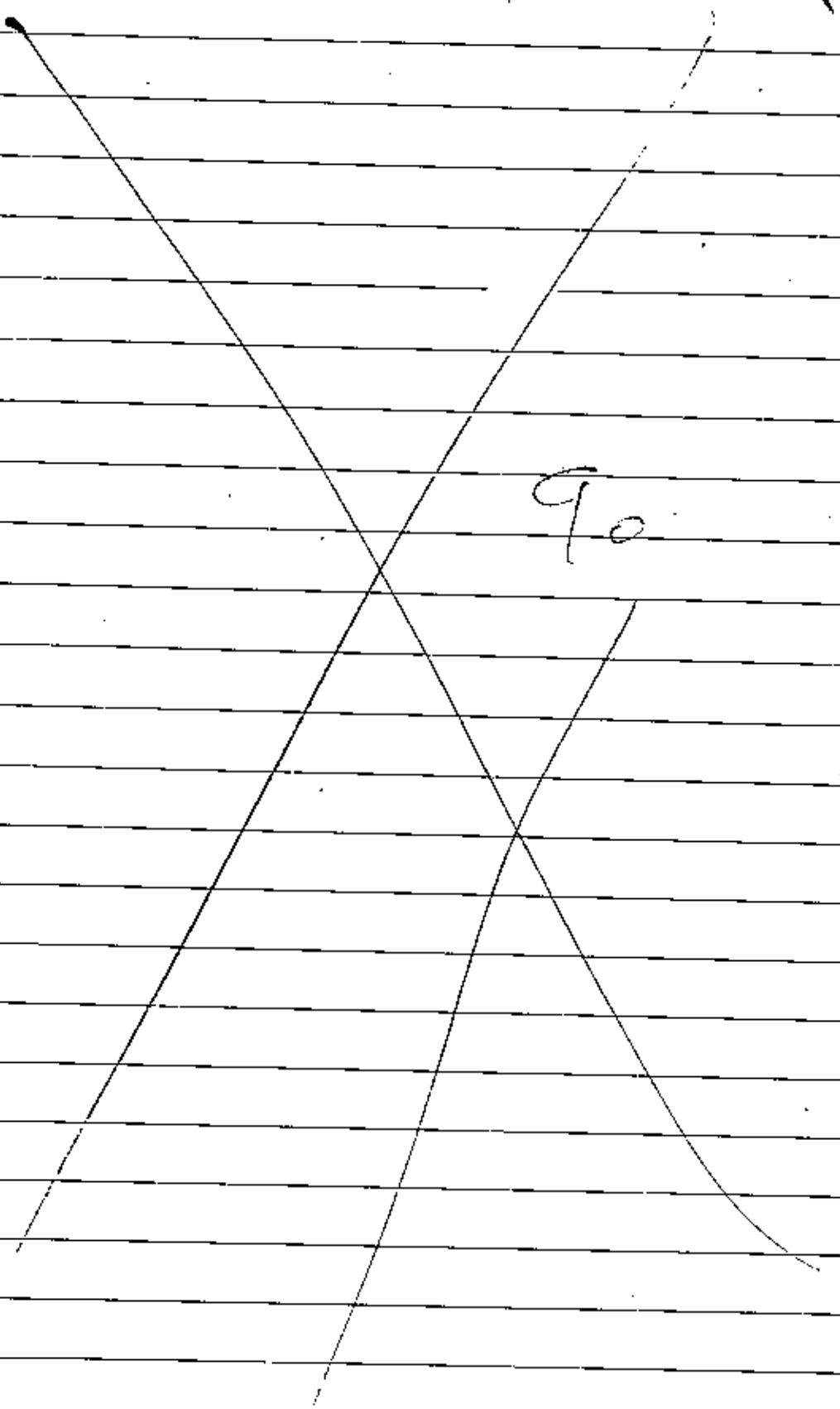

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के ख का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

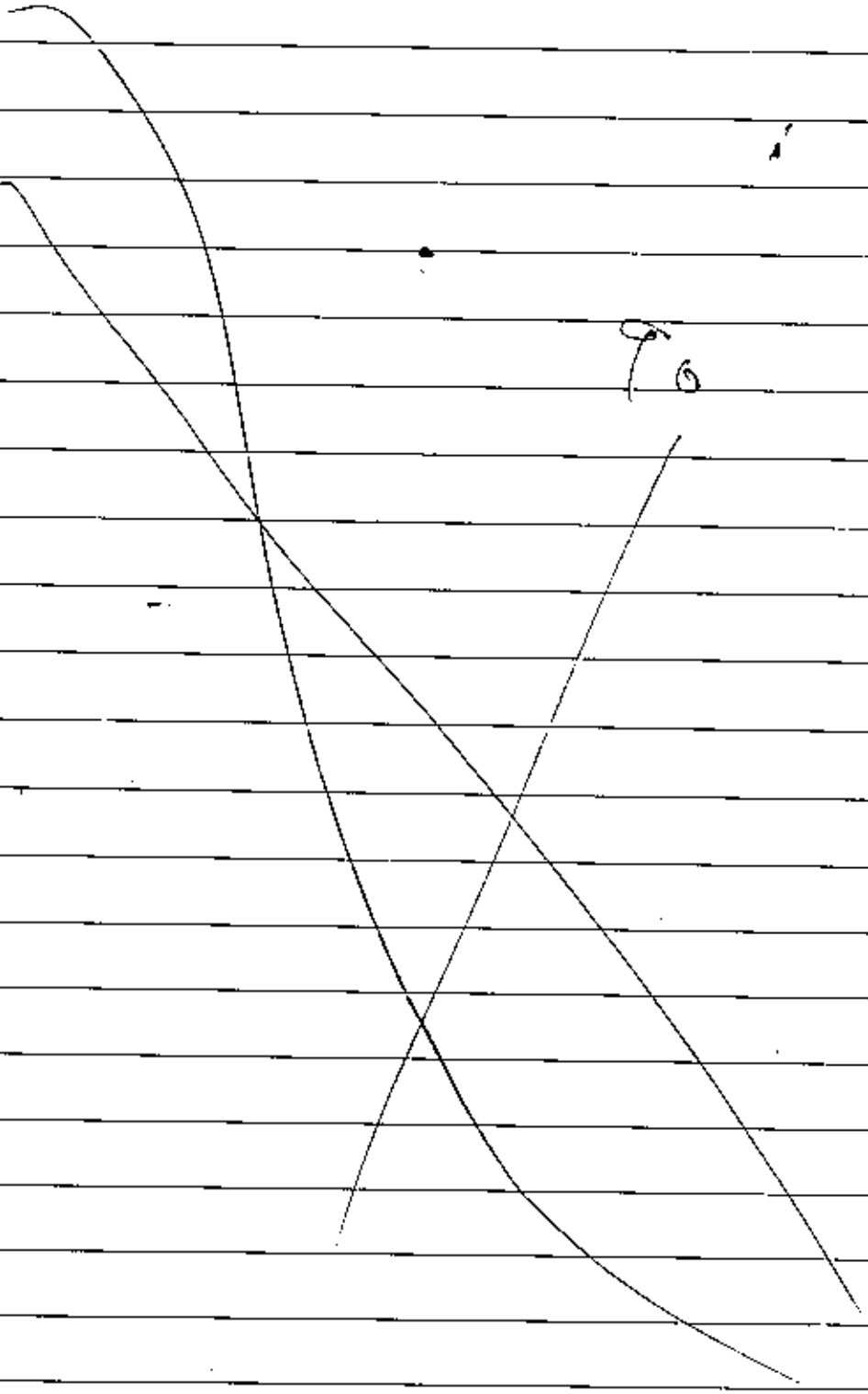

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग